अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

बारहवाँ अधिवेशन

छपरा

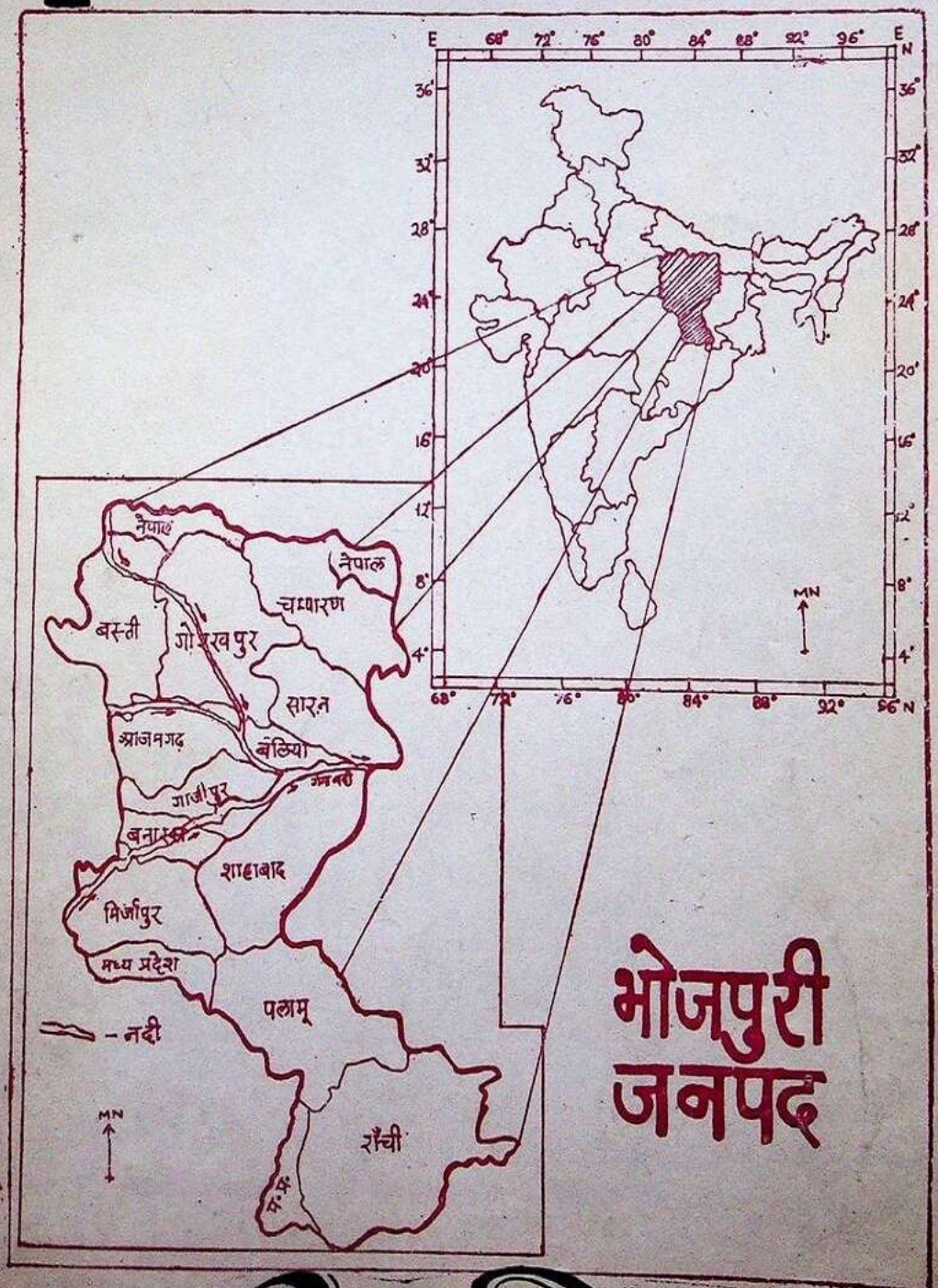

भोजपुरी जनपद

स्मारिका

जीतेन्द्र वर्मा

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
बारहवाँ अधिवेशन, छपरा

२१-२२ मार्च, १९९२

स्मारिका

प्रधान सम्पादक

प्रो. हरिकिशोर पाण्डेय

सम्पादक

प्रो. बच्चू पाण्डेय

डॉ. विश्वरंजन

जनार्दन प्रसाद श्रीवास्तव

प्रबंध सम्पादक

पशुपतिनाथ सिंह

प्रकाशक

स्वागत समिति, बारहवाँ अधिवेशन

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

प्राचार्य मनोरंजन नगर

(मौलाना मजहरूल हक एकता भवन), छपरा

मुद्रक

लेजर प्रिन्टर

नयाटोला, काजीपुर, पटना-4, : फोन : 65-0716

सम्पादकीय

कुछ दिन से पटना बेचैन रहे कि सम्मेलन के बारहवाँ अधिवेसन कहवाँ होई। बात अखिल भारतीय रहे, खेलवाड़ त रहे ना। १५ दिसम्बर, १९९१ के छपरा में, मजहरूल हक एकता भवन का हाता में सभा भइल। जब डॉ. प्रभुनाथ सिंह माला उठा लेलीं त लोग का साँस में साँस आइल। सैकड़न प्रतिनिधियन का समर्थन से गाड़ी बढ़ चलल।

एह अधिवेशन में साहित्य-कुबेर लोग के पधारल देख के छपरा अपना भाग पर इतराइलो बा आ आपन खंडहर देख के सकुचाइलो। बाकिर एगो बात बा। अंग्रेज कवि स्टीफेन स्पेंडर का मोताबिक जवना शहर का खंडहर ना होय ओह शहर का इतिहासो ना होय। आज के 'वर्त्तमान' फ्लैटन लेखा पसन्द कइल जाता—नापल-जोखल, चिक्कन-चाकन, जग-मग—तइयार माल लेखा—बाकरि फुरसत केकरा बा कि 'हेलो' का बाद हालो पूछो ! कवि खंडहर के एही से पसन्द करेलन कि ऊ भूगोल में इतिहास के मुसरा ह। छपरा के एह खंडहर के लाहौरी ईटा प्रो. बच्चू पाण्डेय के लेख 'बोले माटी सारन के' में मिलिहन स।

एह अधिवेशन के मोल एह दिसाई बहुते होई कि एह मौका पर भइल विचार-गोष्ठियन आ किताबन के प्रदर्शनी से भोजपुरी के लोकभाषा से साहित्यभाषा के विकास-यात्रा के लीक पहिचानल जाई।

हम अतने कहब कि भाषा-प्रेम का एह बाढ़ में एह बात के सतरकी राखे के होई कि नाव में मछरिन का साथे घोंघा के लदनी मत होय। साहित्य के लिखले ना, पढ़लो खातिर एगो संस्कार चाहीं। अपना एही सपना के साकार करे खातिर भोजपुरी अतना लमहर साहित्यकारन के होता बना के एह जग में जुटवले बिया। अपने सभन का नेह आ मदद से ई सपना पूरा हो सकेला।

हरिहर पाण्डेय

वैद्यनाथ प्रसाद सिंह 'विकल'
उपाध्यक्ष, स्वागत समिति

कुमार पशुपति सिंह
संयोजक
परिवहन एवं आवास उपसमिति

सुरेश सिंह
उपाध्यक्ष, स्वागत समिति

जनार्दन सिंह
उपाध्यक्ष, स्वागत समिति

जे. एन. सिंह 'सोलंकी'
स्वागताध्यक्ष

दुर्गेशनारायण सिन्हा
महामंत्री, स्वागत समिति

डॉ. रामकिशोर प्रसाद श्रीवास्तव
कार्यालय सचिव
अ. भा. मो. सा. सम्मेलन
आयोजन समिति

जनार्दन प्रसाद श्रीवास्तव
कार्यालय सचिव
स्वागत समिति

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

बारहवाँ अधिवेशन, छपरा

सम्मेलन स्थल : प्राचार्य मनोरंजन नगर
(मौलाना मजहरूल हक एकता भवन), छपरा

प्रतिनिधि आवास स्थल : सिपाही सिंह श्रीमंत नगर
(ब्रजकिशोर किंडर गार्डेन), छपरा

समायोजक

डॉ. प्रभुनाथ सिंह, पूर्व राज्यमंत्री, वित्त, बिहार

डॉ. अनिल कुमार 'आंजनेय', महामंत्री,
अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

श्री खैरूद्दीन अहमद
पी. एन. सिंह कॉलेज, छपरा.

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक

श्री उदित राय, एम. एल. ए.

संरक्षक

श्री रामशेखर प्रसाद सिंह, पूर्व सांसद
श्री भीष्म प्रसाद यादव, पूर्व मंत्री
श्रीमती उमा पाण्डेय, पूर्व मंत्री
श्री लालबाबू राय, सांसद
श्री जयमंगल सिंह, एम. एल. सी.
श्री महाचन्द्र प्रसाद सिंह, एम. एल. सी.
श्री सत्यदेव सिंह, एम. एल. सी.
श्री चन्द्रिका राय, एम. एल. ए.
श्रीमती निर्मला सिंह, एम. एल. सी.
श्री कपिलदेव श्रीवास्तव
श्री शिवाजी राव आयदे, अधिवक्ता
प्राचार्य एच. रहमान
प्राचार्य राय अखिलेन्द्र प्रसाद
प्राचार्य डॉ. हीरालाल राय
प्राचार्य डॉ. सच्चिदानन्द सिंह
प्राचार्य इन्दु सिंह
प्राचार्य डॉ. विनोद कुमार सिंह
श्री जनक यादव, नगरपालिका अध्यक्ष
श्री मो. शमी, अधिवक्ता
प्राचार्य डॉ. गजेन्द्र प्रसाद सिंह

अध्यक्ष

डॉ. गिरिजा देवी सांसद

संयोजक

श्री अजित कुमार सिंह

जीतेन्द्र वर्मा

स्वागत समिति

अध्यक्ष

श्री जयनारायण सिंह 'सोलंकी'

उपाध्यक्ष

श्री सुरेश प्रसाद सिंह, अमनौर
श्री बैद्यनाथ प्रसाद सिंह 'विकल', गरखा
श्री जनार्दन सिंह, मांझी
श्री नगेन्द्र प्रसाद सिंह, पटना
श्री बुद्धन प्रसाद यादव, मांझी
श्री चन्द्रिका राय
श्री दलन यादव

श्री वीरेन्द्र नारायण सिंह, सोनपुर
प्रो. कामेश्वर प्रसाद सिंह, गरखा
श्री शम्भुशरण प्रसाद, अधिवक्ता
प्राचार्य धर्मशीला श्रीवास्तव
डॉ. सी. एन. गुप्ता
श्री मारकण्डेय सहाय

महामंत्री

श्री दुर्गेश नारायण सिन्हा

कार्यालय सचिव

श्री जनार्दन प्रसाद श्रीवास्तव

सदस्य

श्री ब्रजेन्द्र कुमार सिन्हा
डॉ. बी. एन. सिंह, इसुआपुर
श्री ध्रुवनारायण सिंह
श्री रघुमणि सिंह
श्री प्रमोदरंजन सिन्हा
श्री मणीन्द्र कुमार सिन्हा, अधिवक्ता
श्री कन्हैया प्रसाद 'कुंज'
श्री गजेन्द्रनाथ पाण्डेय
श्री टुनटुन बाबू, अधिवक्ता
प्राचार्य डॉ. सीताशरण ओझा
श्री निरसुनारायण सिंह
डॉ. वीरेन्द्र सिंह
श्री रामनारायण पर्वत, अधिवक्ता
श्री जयनारायण भारती, अधिवक्ता
श्री रामप्रताप सिंह, प्रधानाध्यापक, जैतपुर
डॉ. जे. के. सिंह
श्री दिलीप कुमार सिंह
श्री राम उदेश्वर शर्मा
प्रो. कामेश्वर सिंह
श्री मंगल सिंह
श्री बबन सिंह, नयागाँव
प्रो. राजकिशोर सिंह
श्री सभापति पांडेय
श्री नीरज कुमार पाठक
श्री रविरंजन पांडेय
श्री चन्द्रमा सिंह, अमनौर
श्री जयनारायण सिंह, मुखिया
श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह, पटना
श्री राजेन्द्र सिंह
प्रो. देवेन्द्र सिंह, अमनौर

श्री वीरेन्द्र कुमार तिवारी
श्री ललन सिंह
श्री धर्मनाथ सिंह
श्री अवधेश सिंह, अधिवक्ता
श्री रामनरेश सिंह, अधिवक्ता
श्री वीरेन्द्र नारायण सिंह, अधिवक्ता
श्री देवेन्द्र मोहन सिंह
प्रो. सुरेन्द्र प्रसाद सिंह
श्री अवधेश सिंह
प्रो. प्रभुनाथ सिंह, बी.टी.टी.
प्रो. बसंत कुमार सिंह
श्री जगन्नाथ सिंह
श्री अमितेश्वर प्र. वर्मा, अधिवक्ता
श्री लक्ष्मण प्रसाद
श्री भृगुनाथ पाठक, प्रधानाध्यापक
श्री जगतपति सिंह
श्री पशुपति सिंह
श्री धर्मनाथ राय
श्री प्रभाकर जी
श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता
डॉ. देवेन्द्र प्रसाद सिंह
श्री रतन जी
श्री रामो बाबू
श्री गोपाल प्र. सिंह, काफी हाउस
श्री ब्रजकिशोर प्रसाद, अधिवक्ता
श्री मुरली प्रसाद, प्रधानाध्यापक
श्री मिथिलेश कुमार सिंह
श्री दुर्गा प्रसाद सिंह
श्री दामोदर प्रसाद गुप्ता
श्री राजेश्वर सिंह

श्री राजेन्द्र पांडेय, पंकज सिनेमा
श्री रामकिशोर सिंह, पी.एन.बी.
प्रो. रवीन्द्र मिश्र, मांझी
प्रो. दिलीप शर्मा, मांझी
श्री पुन्यदेवनारायण सिन्हा, जलालपुर
श्री कृष्णा सिंह, जलालपुर
प्रभारी, जलालपुर
श्री भारतेश्वर नारायण सिंह, मढ़ौरा
श्री रामबरन सिंह, मढ़ौरा
श्री विजयेन्द्र सिंह, मढ़ौरा
डॉ. महामाया प्र. विनोद, अमनौर
श्री धर्मनाथ सिंह, अमनौर
श्री जयनारायण सिंह, प्रमुख, तरैया
श्री देवनाथ सिंह, तरैया
श्री लालवचन सिंह, प्रधानाध्यापक
श्री मंगल सिंह, तरैया
श्री द्वारिका सिंह, तरैया
श्री रामेश्वर सिंह, तरैया
श्री प्रभुनाथ प्रसाद, तरैया
श्री पवन कुमार सिंह, अमनौर
श्री चन्द्रमोहन सिंह, अमनौर
श्री गुणसागर पांडेय, सोनपुर
श्री वीरेन्द्र वर्मा, सोनपुर
श्री कन्हाई सिंह, सोनपुर
प्रधानाध्यापक, एस. पी. एस. सेमिनरी
श्री सूर्यकुमार शास्त्री, सोनपुर
श्री व्यास जी, मांझी
श्री विनोद कुमार सिंह, सोनपुर
श्री प्रेमानन्द प्रसाद, प्रधानाध्यापक

भोजन उपसमिति

संयोजक

श्री मारकण्डेय सहाय, अधिवक्ता

सदस्य

श्री रामअनुग्रह प्रसाद यादव
श्री चन्द्रिका प्रसाद
श्री चन्द्रकान्त उपाध्याय
प्रो. विवेकानन्द सिंह
प्रो. शैलेश कुमार सिंह
प्रो. शंकर कुमार सिंह
श्री रविरंजन पाण्डेय
श्री तेजनारायण सिंह
श्री राजेन्द्र सिंह
श्री अरूण कुमार सिंह

सांस्कृतिक कार्यक्रम उपसमिति

संचालन मण्डल

डॉ. रामउदेश्वर शर्मा
प्रो. उदयशंकर रुखैयार
श्री ओम प्रकाश सिन्हा
श्री रामकिशोर प्रसाद श्रीवास्तव

परिवहन एवं आवास उपसमिति

संयोजक

श्री कुमार पशुपति सिंह

सदस्य

प्रो. जयराम सिंह
प्रो. कामेश्वर सिंह
श्री युसूफ महमूद
प्रो. कमला सिंह
प्रो. सुवाषचन्द्र सिंह

मंच व्यवस्था उपसमिति

संयोजक मण्डल

डॉ. धीरेन्द्र बहादुर चांद
डॉ. कुँवरबलवन्त सिंह
श्री रामकिशोर श्रीवास्तव
श्री मंजूर अहमद, अधिवक्ता
श्री रवीन्द्र प्रसाद सिन्हा

प्रतिनिधि पंजीकरण उपसमिति

संयोजक

प्रो. राजनन्दन सिंह 'राजन'

सदस्य

श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव
श्री म. सलीम
श्री अभय कुमार सिंह
श्री नीरज कुमार पाठक

स्वयंसेवक उप समिति

संयोजक

प्रो. रवीन्द्र नाथ मिश्र
श्री राजेश नारायण सिंह

सदस्य

श्री अनुप कुमार
श्री शैलेन्द्र प्रसाद
श्री ओम प्रकाश यादव
श्री अनिल सिंह

बोले माटी सारन के

• प्रो० बच्चू पांडेय

त्याग-तपस्या से भीजल
माटी जहँवा के चंदन बा
जग का आंगन में बिहँसत
महिमा मंडित ई नंदन बा
जेकरा गरिमा से पनकल
इतिहास, धरोहर युग-जग के
सारन का धरती मइया के
नित सौ-सौ अभिनंदन बा।

—बच्चू पांडेय

धरम-करम के धनी, त्याग-बलिदान के अगुआ, मरदाही के सबूत, कलम के सिपाही, शौर्य-उत्साह के प्रतीक, आन-बान के रछेआ खातिर सिर हथेली पर लेके तइयार रहेवाला जवान, "भर बाँह चूड़ी ना त फट से रांड़" वाला कहाउत के उजागर करेवाला, सबकर सनेही, भोजपुरी भासा के नेही, दिल दरिआव, मन बादशाह, शंकर लेखा फक्कड़, बंदा बैरागी लेखा अक्खड़, कुँअर सिंह का तेरूआर नीयर चोख, भगत सिंह आ चंद्रशेखर आजाद जइसन सोख, हिमालय अइसन अडिग, गंगा नीयर निरमल, भगीरथ जइसन धीरजवाला, अंगद जइसन टेक के पक्का, दधीचि अइसन बलिदानी, गौतम के गेआन जइसन तेज, बसंत अइसन मादक आ जेठ जइसन अगिया बैताल सारन के माटी के महिमा कुबेर का खजाना में भी ना समेटाई। छितराइल आखर के बाँह में एकरा के घेरल कठिन काम बा।

सारन के लोग के दिल सकेत नइखे। ईहाँ के लोग मन के मइल ना होखे। इहँवा खुलल खेल फरुखाबादी चलेला। अधिकतर आबादी गाँव-गँवई में समेटाइल बा। रख-रखाव आ चमक-दमक से दूर, सादगी का बाना में फरिछ दिमाग के सोच से भरल, ईहाँ के लोग अपना फकीरी में भी मस्त होके रहेके जानेला। गंगा, गंडक आ सरयू जइसन पवित्र नदियन का बाँह में घेराइल सारन प्रकृति के सुंदर उपहार लेखा शोभनउक आ देखनउक बा। लगभग २६८३ वर्गमील में फइलल सारन प्रमंडल इतिहास का आंगन में छोटहन बाकिर असरदार भूगोल लेके मुसका रहल बा।

इतिहास का निगाह में सारन के धरती पहिले मल्ल देश के अंग रहे। बुद्ध का समय में गंडक के नाम 'मही' रहे। आजुओ मढ़ौरा से सोनपुर आ शीतलपुर तक बहेवाली नदी के नाम मही बा। पहिले एह मही नदी के पुरबारी भाग वृज्जिसंघ में शामिल रहे। छठवीं आ सतवीं सदी में सारन कन्नौज का अधीन रहे। मुसलमानी शासनकाल में एह इलाका के मुख्यालय सारन नामक गाँव में रहे। लगभग अठारहवीं सदी तक इहँवा मुसलमानी शासन फइलल रहे। १७६५ में जब अंगरेजन के नजर सारन पर पड़ल त इहँवा के वीर सपूत फतेसाही अंगरेजन के ललकार के

दुतकरलन। इहें के वंशज हथुआ के राजघराना के लोग ह। एकरा पहिले तेरहवीं सदी में तुरकन से लोहा लेवे में अमनउर के चौहानन के तेरूआर चमकल रहे। मुगलकाल में "आइने अकबरी" का हिसाब से सारन में दसगो गाँव आ इगारेगो महाल शामिल रहे। १७६६ में अंगरेजी हुकूमत "सरकार सारन" का रूप में एकर सीमा तय कइलस। एहमें चंपारन भी शामिल रहे। १७७५ में सारन के फतेसाही अंगरेजन के सरिआ के चहेटलन। अंगरेजी हुकूमत के खिलाफत के ई पहिलका बिगुल रहे। सारन गजेटियर के विद्वान लेखक पी.सी. राय चौधरी का हिसाब से फतेसाही सारन के कुअर सिंह रहस, जेकर ललकार अंगरेजन का दिल में खउफ भर देलस। अइसनका वीर पुरुष के प्रेरणाभरल मरदाही के इतिहास के अपना अंचरा में सँजो-सहेज के राखेवाला सारन के धरती अभिनंदन आ पूजा के अधिकारी बा।

आरण्यक संस्कृति के पुरोधा सारन "सादा जीवन आ ऊँच विचार" में विश्वास रखेला। भूखे पेट रहिके भी संस्कृति के सींचे वाला सारन के धरती पर न्यायशास्त्र के जनक गौतम के जनम भइल। आजुओ गोदना में उहाँका आश्रम के निशानी मौजूद बा। अपना हड्डी के दान देके देवता लोगिन के रछेआ करे वाला महर्षि दधीचि छपरा नगर के दहिआवाँ के सपूत रहलन। चिरान के महादानी मोरध्वज के कहानी, दानवीर कर्ण से इचिको घाट नइखे। संत महात्मा लोगन के ईहाँ

लमहर परम्परा रहल बा। मांझी के धरनीदासजी, स्वामी रूपकलाजी, भक्त रामादासजी खाली संते ना रहीं— इहाँसभनके भक्ति आ साधना के जिअतार रचना आजुओ हिंदी आ भोजपुरी कविता के सिंगार बा। एही क्रम में लछमी सखीजी आ कामता सखीजी के भी योगदान बा। परमहंस रामकृष्ण के अनन्य शिष्य अद्‌भुदानंदजी उर्फ लाटू महाराज, रामनिरंजन स्वामी, अद्वैतानंदजी महाराज जइसन संतन के बानी आ उपदेश सारन का कण-कण में रचल-बसल बा। शांति आ अहिंसा के जवन संस्कार सारन में बा, ऊ सब एही संतन के उपदेश के प्रभाव से बा। आजुओ बाबा सुखदेवदासजी, परमसाध्वी स्व. देवकी माताजी के अनवरत साधना आ परोपकार के कार्यक्रम चल रहल बा। लोकमंगल खातिर निवेदित-निछावर अइसन संतन के नाम लेला भर से कलिमल के हरन हो जाला। पूरा मानवता के अंधकार से अंजोर का ओर ले जाये खातिर सारन के महान संत ज्योतिर्मयानंदजी आ माँ योगशक्ति के पूरा समय अमेरिका में बीत रहल बा। भौतिकता का बीचे अध्यात्म के दियना जरा के योग के प्रचार-प्रसार में लागल-भिड़ल अइसन का विभूतियन के भंडार सारन के धरती धन्य बा।

थावे के जानल-मानल भगवती मंदिर, मैरवाँ में हरेराम ब्रह्म के स्थान, मेहंदार के महेन्द्रनाथ मंदिर, आमी में सिद्धपीठ का रूप में स्थित अंबिका भवानी के मंदिर, सोनपुर के शैव आ वैष्णव मत के मिलन के पुनीत धाम, आ संगे-संगे धर्मनाथ मंदिर से हाथ मिलावत पीर बाबा के मजार हिन्दू आ मुसलमान के परेम आ गलबाँही के सबूत बनिके सारन के संस्कृति के उजागर करि रहल बा। इहे कारन बा कि ईहँवा के लोग छल-प्रपंच आ लागलपेट से दूर हटिके अपना करतब में विश्वास राखेला। ईहाँ का माटी के ई खूबी बा कि ईहँवा लोगन का दिल में भेद के देवाल नइखे।

"सोबरन काया, निरमल बानी
टन-मन जोश भरल बा
दिल के साफ, रहन के साजल
सहज सुभाव, सरल बा।'

—बच्चू पांडेय

साँच पूछीं त आज भारत के विदेशन में जवना खूबी खातिर इयाद कइल जाला, ऊ एकर अध्यात्म चिंतन बा। एह अध्यात्म के अंजोर आरण्यक-संस्कृति का जरिये फइलल। एही क्षेत्र में साधना के सीढ़ी पर चढ़िके संतन के गेआन परवान चढ़ल। ईहे कारन बा कि आजुओ सारन के लोग धरम में अटूट सरधा राखेला। ईहाँके चिंतन, दर्शन, कविताई अउरी जिनगी के हर कोना कहीं ना कहीं अध्यात्म का सुवास से गमक जाला।

अपना में जे जगके देखल,
जग में साँच निहारल
मानुस-मानुस भेद मिटाके
दीप-एंकता बारल।
सारन के माटी के महिमा
सिर पर चढ़िके बोले
हिया-हिया के गाँठ भेदके
बन "अभेद" ई खोले"।

—बच्चू पांडेय

सारन के लोग चाहे बर्मा में होखे चाहे सिंगापुर में, त्रिनिदाद में जमल होखे भा फीजी में बिहरत होखे, सूरीनाम में चहकत होखे भा मारीशस में प्रतिभा के अलख जगवले होखे—ईहाँ के लोग चाहे जहाँ रहे बाकिर आजुओ अपना भासा आ परंपरागत रसम रेवाज के जोगा के रखले बा। आज भी सादी-बिआह में जब मारिशस में "गाई का गोबरे महादेव चउका पुराई" के गीत गूंजेला तब घर का अंगनई में छछात भारत उतर जाला। जब भी पुरवा आ पछेया बहेला—अपना जनमभुइया के सनेस के पाती भेंटा जाला। भारत के माटी के गंध आजुओ मन में हुलास भर जाला। खास करके भोजपुरिया भाई सभन का बीचे जात-पाँत आ मजहब के कवनो देवाल ना रहे। विदेश में निखालिस "छपरहिया' आ बेबाक भोजपुरिया के पहचान बच जाला। महुआ के गंध आजुओ मन के मता देला आ अमराई में कोइल के कूक मन में बसंत के उमंग-उछाह के लहर भर देला। हमरा जानपहचान के मारीशस में रहे वाला एगो भाई जब छपरा घूमे अइलन त ऊ बेकहले "अंगुरी में डँसले बा नगिनिया" के गुनगुनाके भोजपुरी के महान् कवि महेन्द्र मिश्र जी के इयाद के ताजा करि दिहलन। अतिथि-सत्कार में अनचिन्हारो के चिन्हार नीयर बूझेवाला, महँगी के बहँगी कान्हा पर ढोअलो का बावजूद चेहरा पर मुसकान लेके जिनगी का उलझन से जूझेवाला सारन के लोग जवना जिअतार इतिहास के रचले बा, आ रच रहल बा—ओहसे सउँसे भारत का एक दिन प्रेरणा लेवे के पड़ी। एकता, सद्‌भाव, त्याग आ देश प्रेम का त्रिवेणी में नहाइल सारन के लोग देश का आगे एगो बानगी पेश कइले बा। सारन के अमर सपूत आ भोजपुरी के महान कवि बाबू रघुवीर नारायण के कविता "बटोहिया" का गूंज में सउँसे भारत के संस्कृति आ इतिहास उजागर बा। अइसनका जिअतार ढंग से भारत के इतिहास-भूगोल के संस्कृति का पसरल बाँह में समेट के अपना जनमभुँइया के कविता के सदानीरा धारा के अरघ चढ़ावेवाला रचना दोसरा भासा में बहुते कम भेंटाई। बानगी देखल जाव—

"ब्यास, बाल्मीक, ऋषि गौतम, कपिलदेव
सूतल अमर के जगावे रे बटोहिया"

—रघुवीर नारायण

भला अइसनका सारन का धरती से केकरा मोह ना होई। सारन अपना लघुता में पूरा भारत के प्रभुता के समेटले बा। कहाँ ले गिनाई?

"माटी का कन-कन में जहँवा
बा अतीत के गाथा
अइसन पावन धरती के
सब लोग झुकावे माथा"

—बच्चू पांडेय

जइसन माटी तइसने लोग। नयका जमाना के नखरा, चोन्हा आ छाव से दूर, आडंबर आ देखावा का तामझाम से अलग-थलग, साफ-सूथर जमीन पर पनकल सहजता का अभरन से दमकत-झमकत सारन के लोगिन के मिजाज फगुआ का करेजगर राग लेखा दमगर आ बसंत के बउराइल बेआर लेखा मनगर बा। ईहाँ के लोग सबका के अंगेछ के चलेवाला बा। भोजपुरिया मन चौबीस कैरेट के सोना हवे—

"मजहब के माया ना बान्हे
जात-पाँत ना छाने
मानवता का आगे दोसर
बंधन ना ई माने"

—बच्चू पांडेय

देश पर जब भी आफत आइल बा, सारन के सपूतन के तरूनाई आगे बढ़िके बिपदा के अन्हरिया के खुसहाली का इंजोरिया में बदल देले बा। इतिहास गवाह बा कि बाबू कुँअर सिंह अंगरेजन से लोहा लेवे खातिर जब सरयू के पार करिके आगे बढ़लन त सारन के जवानी खनखना उठल। आपन भरपूर मदद देके सारन के लोग बाबू कुँअर सिंह का अभियान के संघतिया बनल। तब से लेके १९४२ तक लगातार अंगरेजन से सारन के लोग लोहा लेते रह गइल। हिअवगर आ करेजगर स्वतंत्रता सेनानियन के ईहाँ एगो लमहर कतार खड़ा हो गइल। आजादी के लड़ाई के इतिहास के एगो दमगर अध्याय का रूप में सारन के सपूतन के बलिदान के कहानी बा जवना के अबहीं ले ठीक से नइखे लिखल-पढ़ल गइल—

"हाथे बा लाठी, करेज शेर-बब्बर के
हुमकत हिआव, मरदाही के बाना बा
देश-प्रेम के उमंग, छउकत बा अंग-अंग
सारन के लोग सभे बाँका मरदाना बा"।

—बच्चू पांडेय

स्वतंत्रता का आंदोलन में एकरा मरदाही के पोख्ता सबूत पावल जा सकेला। एक बात पर विशेष ध्यान देवे के बा कि छपरा आ सारन प्रमंडल के लोग १९१६ से ही आजादी के लड़ाई में आपन भागीदारी राखल। एह समय का लड़ाई में मौलाना मजहरुल हक, ब्रजकिशोर बाबू, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद आ शंभू बाबू के सार्थक योगदान रहे। गाँधीजी का चंपारन -यात्रा में भी ईहाँ सभन साथ दिहलीं। साथे-साथे बाबू चंद्रदेव नारायण, माधो सिंह आ विंदेश्वरी बाबू वकील अउरी रामरक्षा ब्रह्मचारी के मोतीहारी यात्रा भइल। १९१८ में गाँधीजी छपरा अइनी। १९१९ में रौलट एक्ट का खिलाफ सारन में अनगिनत सभा भइल। असहयोग आंदोलन का समय छपरा में भरत मिश्र आ माधो सिंह जी के गिरफ्तारी भइल। १९२३-२४ में स्वराज्य दल बनल जेकर अध्यक्ष भइली श्री नारायण बाबू आ मंत्री चुनइनी श्री हरिनंदन सहाय जी। १९२९ से ३१ का बीच जे लोग आजादी के लड़ाई में विशेष रूप से योगदान कइल, ओकरा बारे में बहुत कम लिखाइल बा। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, मौलाना मजहरुल हक, नारायण बाबू, माधो सिंह, डॉ. सैयद महमूद, जगलाल चौधरी, पं. भरत मिश्र, ब्रजकिशोर बाबू का पाछे-पाछे बलिदानियन के एगो लमहर टोली रहे। बाबू प्रभुनाथ सिंह, रामविनोद सिंह, पं. गिरीश तिवारी, महेन्द्र सिंह, रामराजेश्वर तिवारी (साँवलिया तिवारी), झूलन सिंह, लल्लन पांडेय, सरयूशरण पांडेय, ब्रह्मदेव पांडेय, महावीर पांडेय, वृन्दा उपाध्याय, त्रिभुवननाथ पाठक जइसन लोगन के कम बेस भूमिका रहल। लोकनायक जयप्रकाश के प्रखर चिंतन आ तेआग से प्रभावित होके समाजवादी चेतना भी एही बीच फइलल। क्रान्तिकारी राष्ट्रीयता के लहर में १९३१ में फुलवरिया मठ पर जवन हमला भइल ओह में रामभवन सिंह, त्रिभुवन पाठक, कृष्णदेव पांडेय आ रघुनाथ पांडेय जइसन क्रांतिकारियन के खास भूमिका रहे। १९३४ में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी कांग्रेस के अध्यक्ष भइनी आ देश के संकट का घड़ी में राह देखवनी।

१९४० के २८ नवंबर के महामाया बाबू सत्याग्रह कइनी। १९४२ में अंगरेज लोगन के भारत छोड़े खातिर नारा निकलल। ९ अगस्त के पटना में गोली चलल। एह में सारन के सपूत श्री उमाकांत सिनहा आ राजेन्द्र सिनहा शहीद भइलन। १९४२ का सउँसे आंदोलन में जे लोग शहीद भइल ओह में ढेर लोग रहे जवना में श्री श्याम सुंदर लाल, फुलेना प्रसाद श्रीवास्तव, देवशरण सिंह, शुभलाल प्रसाद, भृगुनाथ ठाकुर, किशोर सोनार, चंद्रमा प्रसाद, महेश्वर सिंह, छठ्ठू दर्जी, झगड़ू चमार, सीताराम सिंह, बाबूराम पांडेय, छठू गिरि, नारायण सिंह, हरिनंदन प्रसाद, सोहावीर राम, जयमंगल महतो, रामजीवन सिंह, इंद्रदेव चौधरी, बोधन बढ़ई, रामसेवन राय, रामदेनी सिह के नाम बा। अइसनका अमर शहीदन का खून का खाद पर उपजल आजादी रह-रह के ओहसभन के बलिदान के इयाद जगा देला।

जेकरा कुरबानी से भेंटल, भारत के आजादी
ओकरा खातिर हमनी का अबहीं ले कुछ ना कइनी
जहाँ नींव के ईंट भुलाके पूजा शिखर-कलस के

काहे खातिर ई सुराज? हम किछुओ समझ ना पइनी
—बच्चू पांडे

लोकनायक जयप्रकाश जइसन क्रान्ति, आजादी आ समाजवाद के जनमदाता सारन के धरती बार-बार प्रणाम के अधिकारी बा। आजादी का लड़ाई में गरमाहट ले आवे के श्रेय जयप्रकाशे बाबू के बा। सारन के जवन सपूत लोग क्रांतिकारी कदम उठाके आजादी खातिर जिनगी के दाँव पर लगावल ओह में "सारन के झाँसी के रानी" अमनउर के बहुरिआ श्रीमती रामस्वरुपा देवी के नाम सोनहुला आखर में इतिहास का छाती पर टंकाइल बा। मढ़ौरा कांड का नाम से मशहूर बहुरिआजी का अगुआनी में बाबू बासुदेव सिंह, श्री सुखदेव नारायण मेहता, रामचंद्र राय का सहयोग से छव गो गोरा लोगन के राम नाम सत हो गइल। अइसहीं बरेजा में भी साँवलिया तिवारी का अगुआनी में आजादी के लहर सजोर ढंग से फइलल जवना का चलते ई गीत प्रचलित हो गइल कि **"मांझी थाना बा मरदाना, वीर बनवलन साँवलिया"**। अइसनका लोगन का अलावा भी सारन में आज़ादी का लड़ाई के सिपाहिअन के एगो लमहर जमात रहल बा। बाबू मानिक चंद सिंह, लक्ष्मी सिंह, मु. सलीम, परमात्मा सिंह, रामनाथ सिंह, रामचंद्र गाँधी, त्रिभुवन आजाद, राम बिलास सिंह, रामनंदन शर्मा, रामानन्द यादव, कपिलदेव त्रिपाठी, रामेश्वर प्रसाद सिंह, रामशेखर प्रसाद सिंह, कमला राय, गोरखनाथ चतुर्वेदी, मुरलीधर पांडेय, प्रभुनाथ तिवारी, शंकरनाथ विद्यार्थी, सूर्य सिंह गजाधर प्रसाद श्रीवास्तव, रामाधर सिंह, चंद्रगोकुल शर्मा, शिवकुमार पाठक, रामवचन पांडेय, शीतल सिंह, नथुनी सिंह, विश्वम्भर शुक्ल, सियाबिहारी शरण, मु. शब्बीर, यमुना सिंह, कुमार कालिका सिंह, शिवशंकर सिंह, जनकदुलारी, सभापति सिंह, नथुनी सिंह, द्वारिकानाथ तिवारी, अब्दुल गफूर, जब्बार हुसेन, दारोगा राय, हरि माधव प्रसाद सिंह, श्रीमती प्रभावती देवी, श्रीमती शांति देवी, सरस्वती देवी, रामदुलारी सिंह, शारदा देवी, तारा देवी, प्रभा देवी, रामजयपाल सिंह यादव, कपिलदेव प्रसाद श्रीवास्तव, रामाचरण शुक्ल, राजवंशी सिंह, रामानंद मिश्र "बिकल", वीरेन्द्र आजाद, नगीना राय शर्मा, राणा तेजबहादुर सिंह, जगन्नाथ मिश्र, बिरजा मिश्र, अमर सिंह, नंद किशोर नारायण लाल, सुदिष्ट सिंह, इंद्रासन तिवारी, महाराज पांडेय, भिखारी राम, गोपाल प्रसाद यादव, रामवृक्ष ब्रह्मचारी, केदारनाथ ब्रह्मचारी, रामयश सिंह, जगन्नाथ प्रसाद, रामदेव सिंह, धर्मनाथ सिंह, गोपालदास, वशिष्ठ सिंह, नागेश्वर प्रसाद, प्रियरंजन, डॉ. के. एन. गोरिल्ला, गुरुवचन राम, रामेश्वर दत्त शर्मा के नाम का अलावा भी छुटल-फटकल बहुते स्वतंत्रता सेनानी लोग बा जेकरा पर सारन के धरती आ इतिहास के अभिमान बा।

छुटल-फटकल जे भी बा आजादी के दीवाना
ओकरा आगे शीश झुकाके मन सबकर हरखाला
जब-जब आफत के बादल के छावे घुप्प अन्हरिया
बलिदानी लोगन का ओरी नजर सहज उठि जाला।
—बच्चू पांडेय

मरदाही के बानगी देखावे वाला सारन का धरती पर कलम के सिपाहिअन के भी लमहर जमात रहल बा। आजुओ साहित्य आ भासा के सेवा का क्षेत्र में सारन के योगदान कवनो कम नइखे। इतिहास का दरपन से जवना साधक साहित्यकार आ कवि लोग के रूप झिलमिला रहल बा ओह में सोहरवीं सदी के दूगो महान् भक्त कवि के दर्शन हो रहल बा। धरनीदास जी आ शंकर चौबे जी के नाम एह कड़ी में गिनती लायक बा। धरनीदास जी के शब्द प्रकाश, प्रेम प्रकाश अउरी शंकर चौबेजी के रागमाला भक्ति के कइतरफा सरूप के प्रकाशन बा।

एकरा बाद का पीढ़ी में दामोदर सहाय "कविकिंकर," जोवाराम चौबे, दीवान झब्बूलाल, ब्रह्मदेव नारायण "ब्रह्म", शिवनाथ दास, हरिचरण दास, हरलवाल आदि कविलोग भी भक्ति रस से भींजल रचना के दान कइल।

"कलम चलाके जे उटकेरल, जिनगी के हलकानी
फरज बनेला कि हमनी सब उनका के पहिचानी"
—बच्चू पांडेय

१९वीं सदी में सिसवन के सखावत जी बीर रस में "कुँअर पचासा" के रचना कइनी। एही समय में माँझा के श्रीधर साहा जी अउरी पटेढ़ी के बाबू नगनारायण सिंह जी हिंदी में सरस काव्य के रचना कइनी। पंडित रामावतार शर्मा जी का जरिये जहँवा संस्कृत में "मारुति शतकम्" जइसन प्रौढ़ रचना भेंटल, उहँवे हिन्दी साहित्य के निबंधन के भंडार भी भेंटल। महापंडित राहुल सांकृत्यायन भोजपुरी में भी "जपनिया राछस" लिखनी। बौद्ध दर्शन के त ऊहाँ का त्रिपिटकाचार्य रहीं। हिंदी में "दर्शन दिग्दर्शन" ऊहाँ के नामी किताब बा। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी के "आत्मकथा" सुघड़ हिंदी के आदर्श नमूना बा। जयप्रकाश जी भी समाजवादी साहित्य के हिंदी में लिखनी आ कुछ नीमन कहानियो लिखनी। आयुर्वेद में महामहोपाध्याय पं. श्यामनारायण चौबे जी अउरी विश्वप्रसिद्ध आयुर्वेदज्ञ डॉ. रामरक्ष पाठक जी हिंदी का माध्यम से लिखनी। डॉ. पाठक के "काव्य चिकित्सा" आयुर्वेदिक साहित्य के अनमोल रतन बा। संस्कृत के प्रकांड विद्वान पं. भरत मिश्र जी अउरी ऊहाँ के योग्य शिष्य आचार्य कपिलदेव शर्मा जी हिंदी का माध्यम से संस्कृत के सरल बनावे में काफी योगदान कइनी।

आचार्य शिवपूजन सहाय जी त साहित्य के पुरोधा रहीं। हिंदी गद्द का साथे-साथे ऊहाँका लेखक लोग के भी संवरनी।

हिन्दी गद्य के आगे बढ़ावे में श्री राजवल्लभ सहाय, पारसनाथ सिंह, पं. जीवानंद शर्मा, गोस्वामी भैरव गिरि, फूलदेव सहाय वर्मा., पं. कार्त्तिकेय चरण मुखोपाध्याय, विश्वनाथ सहाय, सांवलिया बिहारी वर्मा, पं. यमुना प्रसाद त्रिपाठी, पं. मथुरा प्रसाद दीक्षित, योगेन्द्र प्रसाद 'योगी', संतकुमार वर्मा, शिवचंद्र शर्मा, प्राचार्य मनोरंजन, डॉ. बाँके बिहारी मिश्र, डॉ. गोरखनाथ सिंह, ठाकुर अच्चुतानंद सिह, डॉ. विश्वनाथ प्रसाद वर्मा, डॉ. धमेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, डॉ. राधाकृष्ण शर्मा, जी. पी. श्रीवास्तव, राधाकृष्ण, श्री उपेन्द्रनाथ मिश्र "मंजुल", श्रीकांत गोविन्द. डॉ. हरि दामोदर, कुमारी सत्यवती, इंदुमती कुमारी के सफल योगदान रहल बा।

'नकेनवाद' आ 'प्रपद्यवाद' के पुरोधा, बहुभाषाविद, प्रखर आलोचक, प्रो. नलिन विलोचन शर्मा जी के आधुनिक हिंदी के साजे-संवारे मे समर्थ योगदान बा। ऊहाँ का कहानी अउरी आलोचना के नया आयाम देले बानी। एही तरे प्रमुख भाषाशास्त्री, हिंदी आ संस्कृत के प्रकांड विद्वान, प्रख्यात नाटककार, आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा जी भी हिंदी गद्य के भंडार भरे में कोताही नइखीं कइले। प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डॉ. विश्वनाथ प्रसाद, डॉ. मुरलीधर श्रीवास्तव, डॉ. रामजी पांडेय, डॉ. बजरंग वर्मा, विश्वाथ सिंह, शिवाजी राव आयदे, प्रो. राजेन्द्र किशोर, डॉ. केदार नाथ लाभ, डॉ. जवाहर सिंह, डॉ. अनिल कुमार पांडेय, डॉ. रामाशीष प्रसाद, डॉ. विनोद कुमार सिंह, प्रो. बच्चू पांडेय, डॉ. विश्वरंजन आदि के भी अपना-अपना समरथ का मोताबिक भाषाशास्त्र, आलोचना, कहानी आ निबंध के संवारे में योगदान बा।

हिंदी कविता में तोफा राय, धरनीदास, लक्ष्मी सखी से चलल आवत परंपरा में नया तेवर आ रूप-रंग भरे में श्री दामोदर सहाय "कविकिंकर", प्राचार्य मनोरंजन, प्रो. भुवनेश्वर प्रसाद "भुवनेश", सियावर शरण, उपेन्द्रनाथ मिश्र "मंजुल", डॉ. मुरलीधर श्रीवास्तव, आचार्य नलिन विलोचन शर्मा, हरेन्द्रदेव नारायण, पुण्यदेव नारायण सिंह, श्रीकांत गोविंद, सारंगशास्त्री, आचार्य महेन्द्र शास्त्री, सूर्य कुमार शास्त्री, डॉ. केदारनाथ लाभ, पांडेय कपिल, प्रो. राजेन्द्र किशोर, प्रभाशंकर मिश्र, लक्ष्मण पाठक "प्रदीप", प्रो. नगेन्द्र कुमार सिंह, प्रो. श्रीकांत मेहरोत्रा "श्रांत", प्रो. हरिकिशोर पांडेय, प्रो. बच्चू पांडेय, बलवंत सिंह, डॉ. विश्वरंजन, डॉ. रामशीष प्रसाद, डॉ. रिपुसूदन श्रीवास्तव, पांडेय रामेश्वरी प्रसाद, श्रीमती प्रकाशवती नारायण, अवधेन्द्र देव नारायण, शकुंतला सिन्हा "करुणा", शिवदास पांडेय, डॉ. धीरेन्द्र बहादुर चाँद, ओम प्रकाश सिन्हा, रिपुज्जय "निशांत", राम किशोर प्रसाद श्रीवास्तव, गोपीवल्लभ सहाय, जनार्दन प्रसाद श्रीवास्तव, ध्रुवनारायण सिंह, प्रो. पद्माकर झा, प्रो. राजगृह सिंह, देवांशु रंजन के रचना के योगदान बा।

भोजपुरी कविता के साज-सिंगार करेवाला लोगन में बाबा राघोदास, रुपकलाजी, लक्ष्मी सखी, बाबू रघुवीर नारायण, पं. महेन्द्र मिश्र, भिखारी ठाकुर, प्राचार्य मनोरंजन के ऐतिहासिक आ लमहर योगदान बा। बाबू रघुवीर नारायण जी राष्ट्रप्रेम के धारा बहवनी, पं. महेन्द्र मिश्र जी 'पूरबी' के जनम देनी। भिखारी ठाकुर जी भोजपुरी के जनता का बीच ले जइनी आ मनोरंजन बाबू कविता के संस्कार देनी। आचार्य महेन्द्र शास्त्री भोजपुरी कविता के फइलाव देनी आ हरेन्द्रदेव नारायण जी कुँअर सिंह महाकाव्य लिखके एकरा कूबत के उजागर कइनी। एकरा बाद के कवि लोगन में अर्जुन सिंह "अशांत", अनिरुद्ध आ पांडेय कपिल के योगदान सराहनीय रहल। प्रो. उमाकांत वर्मा, प्रो. सतीश्वर सहाय, मूसाकलीम, लक्ष्मण पाठक 'प्रदीप', शारदा प्रसाद, सिपाही सिंह "श्रीमंत" के भोजपुरी कविता में पुरहर योगदान भइल। प्रो. हरिकिशोर पांडेय, प्रो. बच्चू पांडेय, डॉ. रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव, डॉ. तैयब हुसेन 'पीड़ित', डॉ. विश्वरंजन, डॉ. धीरेन्द्र बहादुर चाँद, अक्षयवर दीक्षित, डॉ. प्रभुनाथ सिंह, ब्रजकिशोर प्रसाद, गोपीवल्लभ सहाय, पांडेय सुरेन्द्र, रघुनाथ चौबे, रिपुज्जय "निशांत", सोमेश, जमादार भाई, डॉ. वीरेन्द्र नारायण पांडेय, वैदेही शरण "बनियापुरी", वैद्यनाथ "विभाकर", गोपाल मुखर्जी, वीरेन्द्र मिश्र "अभय", दक्ष निरंजन "शम्भू", पराग, डॉ. राजेश्वर सिंह "राजेश", लक्ष्मीकांत मिश्र "गरीब", डॉ. जौहर सफियाबादी के कलम से हर तेवर आ मिजाज के रचना लिखाइल बा आ लिखा रहल बा। भोजपुरी मे हास्य-व्यंग्य का कविता में मुँहदुब्बरजी आ ध्रुवनारायण सिंह आ वीरेन्द्र मिश्र के योगदान बा।

भोजपुरी गद्य में पं. रामनाथ पांडेय के उपन्यास "बिंदिया" के ऐतिहासिक महत्व बा। एहसे भोजपुरी गद्य का एगो नया आयाम भेंटल। पांडेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह के "घर-टोला-गाँव" आ पांडेय कपिल के "फुलसुंघी" से भोजपुरी के उपन्यास के एगो दिशा मिलल। फुलसुंघी एगो सफल उपन्यास बा। प्रो. सतीश्वर सहाय के नाटक "माटी के दीया घीव के बाती" एगो राह देखवलस। विमलेश जी भी एकाधगो ऐतिहासिक नाटक लिखलन। भोजपुरी गद्य के ठोस रूप देवे खातिर पांडेय कपिल जी सम्मेलन पत्रिका का जरिये बहुते काम कइनी। कथा क्षेत्र में पं. रामनाथ पांडेय, प्रो. पांडेय चंद्र विनोद, अक्षयवर दीक्षित, डॉ. तैयब हुसेन पीड़ित, डॉ. वीरेन्द्र नारायण पांडेय के पुरहर योगदान बा।

भोजपुरी निबंध में प्रो. हरिकिशोर पांडेय, डॉ. बसंत कुमार, डॉ. प्रभुनाथ सिंह आ नगेन्द्र प्रसाद सिंह के सराहनीय योगदान बा। छपरा से जब पहिला बार भोजपुरी पत्रिका "माटी के बोली" निकलल त ओकरा संपादक लोगन में प्रो. सतीश्वर सहाय, प्रो. बच्चू पांडेय

जीतेन्द्र वर्मा

आ डॉ. विश्वरंजन जी रहीं। बाद में श्री विश्वनाथ प्रसाद जी एकर संपादक भइनीं। एह पत्रिका में प्रो. बच्चू पांडेय के दर्जन भर से ऊपर निबंध भोजपुरी कविता आ गद्य के अतीत, वर्त्तमान आ निखरे वाला सरूप पर रहे। भोजपुरी समालोचना में प्रो. हरिकिशोर पांडेय आ डॉ. विश्वरंजन के खास दखल बा। ललित निबंध आ ऐतिहासिक निबंध में प्रो. बच्चू पांडेय के नाम लीहल जा सकेला।*

अतना सब बा बाकिर ई कहे में हमरा संकोच नइखे कि भोजपुरी खातिर जवन होखे के चाहीं ऊ सब नेंइखे होत। जनमतुये में जम्हुआ छुअला जइसन हाल हो गइल बा भोजपुरी के। अबहीं त भासा के कोरखाँख दुरुस्त करके बेरा बा। दोसरा भासा सभन का सोझा खड़ा होखे खातिर जवन रूप, रंग, ऊंचाई आ गहराई भासा में होखे के चाहीं, ओकरा खातिर ढ़ेर पेसरम आ लगन के जरूरत बा। अबहिएँ राजनीति, गुटबंदी आ गोड़खिंचाई के झमेला उठ जाई त आगे का होई। जेकरा हाथ में एकर अगुआनी के भार बा ओह के फरिछ मन से सबका के समेट के चले के पड़ी। आपन-पराया देखला से रचना के मूल्यांकन ना होई, अउरी स्तरीय रचना का अभाव में भासा के मूल्यांकन ना होई। लिखाव, खूब लिखाव, बाकिर ठोक-ठेठा के लिखाव।

संस्कृति के सींचे में संगीत के लमहर भूमिका बा। छपरा में रामलीला मठिया पहिले संगीत के केन्द्र रहे। महंथजी खुद संगीत के जानकार आ पारखी रहीं। एह मठिया के उठान के एगो समय रहे, जब ध्रुपद के नामी गवैया उस्ताद अमन खाँ बिराजत रहीं। उहाँ का प्रसाद से बाबू लाड़लीशरण, रघुनाथ सिंह काफी कुछ सिखनीं। तमकुही के दीपराज, रामराज, तसद्दुक हुसेन जइसन गवैया लोगन के डेरा छपरा में रहे। एह लोगन के साधना से सुवासित तान के अनुगूंज में आजुओ हथुआ के रामनरेश जी, छपरा के पं. शिवदास गुरु, भगवती प्रसाद सिंह "शूर", प्रो. भुवनेश्वर प्रसाद 'भुवनेश", उस्ताद हफीज मियां, उस्ताद रफीक मियां, तौकी बाई, रसूलन बाई, बिनोदी बाई के चेहरा अतीत का झरोखा से झाँक जाला। आजुओ ओह परंपरा के गायकी के कंठ में संजो के राखे वाली स्वरसाधिका मुरादन बाई हमनी का बीच में बानी।

बाबू गुणराज सिंह के हाता संगीत के पुरनका केन्द्र रहे जहँवा नया-पुरान गवैया लोगन के बराबरे जमघट लागल रहे। अइसहीं मासूम गंज के जटू पांडेय जी के घर भी गायन-वादन के केन्द्र रहे। स्व. शांति पाण्डेय का सितार में महारत रहे। स्व. मनीन्द्र नाथ चटर्जी आ स्व. फणिभूषण सान्याल जी छपरा में संगीत के काफी बढ़ावा देनी। आजुओ पं. राम प्रकाश मिश्र, आदित्य झा, महंथ उमापति राम, उदय सिंह, डॉ. प्रतिमा सहाय, निवेदिता मित्रा, मानसी चटर्जी जइसन साधक लोग कंठ संगीत के जिंदा रखले बा। पखावज वादन में वंशी गिरि, वायलिन में गोपाल मित्र, तबला में जगत सिंह, डॉ. श्रीमती गिरिजा देवी एम. पी. के शोहरत बा।

छपरा में नाटक के भी बड़ा पुरान परंपरा बा। नाटक लेखन में बाबू जगन्नाथ शरण, जी. पी. श्रीवास्तव, आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा के काफी नाम भइल। बाद का पीढ़ी में मूसाकलीम, प्रो. सतीश्वर सहाय वर्मा, अमियनाथ चटर्जी आ बैकुंठ के नाटक के धूम मचल। पुरनका मंच में "काली बाड़ी नाट्य समिति" काफी समृद्ध रहल जहाँ डी. एल. राय के लिखल नाटक भइल रहे। बाद में छपरा-क्लब, 'शारदा नाट्य समिति' अउरी "एमेच्योर ड्रामेटिक सोसाइटी" बनल। एह क्षेत्र में स्व. महेन्द्र प्रसाद, स्व. श्यामदेव नारायण सिन्हा आ स्व. हफीज बाबू के काफी योगदान रहे। छपरा में महेन्द्र मंदिर के स्थापना एकर सबूत बा। एह धारा के जीवंत राखे में श्री कपिल देव श्रीवास्तव, मूसाकलीम, अमियनाथ चटर्जी, प्रो. उदय शंकर रुखैयार, डॉ. अवधेश कुमार वर्मा, डॉ. रसिक बिहारी वर्मा, योगेन्द्र प्रसाद व्याहुत, मु. जकरिया जइसन लोग बधाई के काबिल बा।

छपरा उर्दू भासा आ साहित्य के विकास में भी आगे रहल बा। पुरनका शायर लोगन में मौलाना अब्दुल्लाह राजी, 'शफा', भगवती प्रसाद "हमराज", मो. वशीर, 'नश्तर', 'वहशी' अउरी अजहर का शायरी से उर्दू का विकास के राह मिलल। बाद में जमील मजहरी आ प्रो. इज्तबा हुसेन रिजवी का शायरी से एकरा ऊँचाई के मंजिल मिलल। तमाम उर्दू शायरी में जमील मजहरी आ प्रो. रिजवी के कलाम आज उदाहरन बन गइल बा। बाबू मदन मोहन सहाय "मोहन", डॉ. सत्यनारायण "सत्तन", राजनाथ "रहबर" कै कलाम से भी उर्दू शायरी काफी आगे बढ़ल। बाद का पीढ़ी में नैयर जैदी, कौसर सीवानी, प्रो. हमीद सीवानी, डॉ. मंजूर नोमानी, जज्ब गोपालपुरी, दक्ष निरंजन "शम्भू", तंग इनायतपुरी के कलाम से उर्दू के विकास के नया आयाम खुल रहल बा। उर्दू के नया कविता का विकास में मो. मेहदी रिजवी के बड़ा नाम बा।

पत्रकारिता में भी सारन पीछे नइखे रहल। पहिलका दौर में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी, ब्रजकिशोर बाबू आ मुरली बाबू "सर्चलाइट" के सेवा कइनी। मौलाना मजहरुल हक साहेब "मदर-लैंड" निकाल के सारन के माथा ऊंचा कइनी। पं. कार्त्तिक चरण मुखोपाध्याय जी "सारन समाचार" निकलनी। पत्रकारिता का क्षेत्र में बाबू राजवल्लभ सहाय (आज), सीताराम सिंह (आर्यावर्त्त) आ विश्वनाथ सिंह (आर्यावर्त्त) के बहुते नाम भइल। शिवचंद्र शर्मा जी "अद्भुत" के अउरी आचार्य नलिन विलोचन शर्मा जी "दृष्टिकोण" के संपादन कइनी। पत्रन के यशस्वी

संवाददाता का रूप में पं. विश्वनाथ मिश्र (इंडियन नेशन), श्री राधेश्याम सिंह (इंडियननेशन), श्री जगदीश्वरी शरण जी (सर्चलाइट), श्री धीरेन चंद्र सिन्हा (युगांतर आ अमृत बाजार पत्रिका), सतीशचंद्र शर्मा (आज) काफी नाम कमइनी। जगदम महाविद्यालय के प्राचार्य स्व. सुशील कुमार सिंह आर्यावर्त्त आ इण्डियननेशन के संवाददाता का रूप में आपन एगो अलग पहचान बनवले रहीं। श्री शिवाजी राव आयदे के बहुआयामी व्यक्तित्व खाली पी. टी. आई. का संवाददाता का रूप में ना सिमटल रहल। उहाँका हिंदु-मुस्लिम एकता के अलख जगावे खातिर "सेक्यूलर रिपब्लिक" के प्रकाशन भी कइनी। श्री अक्षयवट नाथ तिवारी (हिन्दुस्तान समाचार) श्री केदार नाथ अग्रवाल ('आज' अउरी 'आकाशवाणी') पांडेय रामेश्वरी प्रसाद (इंडियननेशन) का संवाददाता का रूप में काफी यश अरजले बानी। श्री शत्रुघ्न तिवारी, पृथ्वीनाथ तिवारी (सारण संदेश) श्री मुरलीधर पांडेय (यात्री), श्री हरिशंकर उपाध्याय (अधिकार), बाबू ईश्वर शरण (शिक्षक), कुमार कालिका सिंह (आदर्श किसान), अखौरी शिवनारायण प्रसाद (बिहार टाइम्स) का प्रकाशक आ संपादक का रूप में हमेशा चर्चित रहब। श्री सतीश्वर सहाय वर्मा, श्री बच्चू पांडेय, डॉ. विश्वरंजन अउरी श्री विश्वनाथ प्रसाद के नाम "माटी के बोली" का संपादक का रूप में एगो इतिहास रही। सूर्यदेव पाठक 'पराग' के "बिगुल" साँचहूँ बाज रहल बा। भोजपुरी के बाल पत्रिका 'नौनिहाल' (संपादक : अर्द्धेन्दु भूषण) अपना आप में एगो मिसाल बा। प्राचार्य सुशील कुमार सिंह, प्रो. ए. के. वर्मा, डॉ. त्रिभुवन नारायण सिंह, सरयू शास्त्री जइसन सम्मानित पत्रकार क्रमशः इंडियन नेशन, यू. एन. आइ, प्रदीप आ आर्यावर्त्त के बहुते सेवा कइल। श्री मुजफ्फर हुसेन, सुरेन्द्र प्रसाद चौरसिया जइसन नयका पत्रकार लोगन से लमहर आसा बा।

महाबली सूचित सिंह, रुस्त में हिंद वंशी सिंह आ हाजी अदालत जइसन पहलवानन के जनमभुइँया खेलकूद में भी पाछे नइखे रहल। १९२९ से एकर सफल परंपरा बा। ओह समय जिलाधिकारी एस. ए. खाँ, महावीर प्रसाद, महेन्द्र प्रसाद, हाशिम अली, बाबू श्याम देव नारायण सिन्हा का सफल योगदान से खेलकूद काफी आगे बढ़ल।

ओह घड़ी फुटबॉल काफी प्रचलित रहे। ओह समय के मशहूर खेलाड़ी रहस—जब्बार हुसेन, ठाकुर सूरज सिंह, वृजेन्द्र देव नारायण, राघवेन्द्र, देवनारायण, अमर सिंह, कुमार पशुपति सिंह, मु. हनीफ, ईसा खाँ अउरी नकछेदी। १९३६ में छपरा टाउन क्लब "लाहिड़ी शील्ड" जितलस।

हॉकी के परंपरा भी पुरान बा। हॉकी के जानल-मानल खेलाड़ी रहलन—नागेन्द्र बहादुर चाँद, कमला प्रसाद, लक्ष्मी प्रसाद, दीनबंधु सिंह, शंकर प्रसाद आ बिंदेश्वरी प्रसाद। टीम के मैनेजर रहलन श्री प्रशांत घोष। १९४९ में दहिआवां क्लब "दुर्गा देवी शील्ड" जितलस। एकर खेलाड़ी रहलन—एरिक, सुलेमान, नगीना प्रसाद, बैजनाथ सिंह, दीनबंधु सिंह, मेंहदी हुसेन, श्याम बिहारी आ कपिलदेव।

आजादी का बाद एहके आगे बढ़ावे में कलक्टर मेजर बी. एन. बसु, प्राचार्य सुशील कुमार सिंह, जगत सिंह, बैजनाथ सिंह, दीनबंधु सिंह, प्रो. वेदानंद सिंह, रामकिशोर प्रसाद श्रीवास्तव के काफी योगदान रहल बा।

अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन के बारहवाँ अधिवेशन का बारे में—

एह अधिवेशन का बारे में कुछ कहे से पहिले ओह आदमी के बधाई देहल जरूरी हो जाता जेकरा लगन आ मेहनत का बल-बूता पर सारन का धरती पर भोजपुरी के अइसन का समारोह हो रहल बा। हमार इशारा डॉ. प्रभुनाथ सिंह का ओर बा। अपना ओर से उनका बारे में कुछ आखर के फूल निछावर कर रहल बानी। "राजनीति के सफल खेलाड़ी, कांग्रेस के प्रान, अपना अपना करतब से सारन के सदा बढ़वलन मान, अर्थशास्त्र के मानल ज्ञाता, सबका मन के मीत, जेकरा कंठ हमेसा थिरके, भोजपुरी के गीत करतब, लगन, हिआव समेटले, छउकत चारो ओर प्रभुनाथ नयका वेतन में, सचहूँ में सिरमौर"

—बच्चू पांडेय

डॉ. गोरखनाथ सिंह आ डॉ. रामबिहारी सिंह का परंपरा के विद्वान अर्थशास्त्री, भोजपुरी के जानल-मानल लेखक आ कवि, सामाजिक-सांस्कृतिक समारोहन के

*अइसन लेखन में जहाँ नाम-स्मरण कइल जाला, कुछ-ना-कुछ आवश्यक नाम के छूट हो गइल अस्वाभाविक नइखे। अइसन कुछ जरूरी नाम हमरा इयाद पड़ते बा, जवना के उल्लेख इहाँ सादर कइल जाता—स्वतंत्रता सेनानी श्री चन्द्रिका सिंह, श्री इन्द्रासन सिंह आ पं. मुन्दर शर्मा, आ साहित्यकार स्वर्गीय सत्यवादी छपरहिया, स्वर्गीय ब्रजशंकर वर्मा, स्वर्गीय उमानाथ, स्वर्गीय राधेश, स्वर्गीय शैलजा कुमारी श्रीवास्तव, श्री रामनगीना सिंह 'विकल', श्री सीतारामचन्द्रशरण 'राम', श्री राधामोहन सिंह, प्रो. ब्रजकिशोर, श्री रघुनाथ सिंह विशारद, स्वर्गीय साधुशरण, श्री चन्द्रदीप पाण्डेय, श्री राधामोहन चौबे 'अजन', श्री व्यास मिश्र, श्रीमती रूपश्री, स्वर्गीय योगेन्द्र प्रसाद सिंह, डॉ. उमाशंकर 'उषाकर', श्री सीतेन्द्रदेव नारायण, श्रीमती सुधा वर्मा, श्री कुमार अरूण, शिक्षाशास्त्री स्व. गणेश प्रसाद सिंह, डॉ. हरिप्रपन्न द्विवेदी। एकरा बादो, कुछ जरूरी नाम छूटल होई। जहाँ ले इयाद पड़ल, अनुपूरक रूप मे नाम स्मरण कइल हमरा जरूरी बुझाइल।

—पशुपतिनाथ सिंह
(सदस्य, सम्पादक मंडल)

अगुआ, सारन के प्रतिभा आ अभिमान के प्रतीक भाई डॉ. प्रभुनाथ सिंहजी का अगुआनी में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलनके सारन में आयोजन, साहित्यकि अंगड़ाई के सिहरन बनिके बसंती बेआर लेखा भोजपुरी के नेही छोही भाई लोगन के मन-परान के गुदगुदा रहल बा। एह यज्ञ के पूरा करे में ऊहाँके संघतिया लोगन में श्री जयनारायण सिंह सोलंकी, श्री दुर्गेश नारायण सिन्हा, प्रो. हरिकिशोर पांडेय, श्री रामकिशोर श्रीवास्तव, श्री खैरुद्दीन अहमद, श्री मार्कण्डेय सहाय, डॉ. विश्वरंजन, श्री जनार्दन श्रीवास्तव, कुमार पशुपति सिंह, राजेश नारायण सिन्हा, नीरज कुमार पाठक, राजन उपाध्याय अइसन सुधी लोगन के बधाई देहल भी जरूरी हो जाता। हम माफी चाहतानी एह खातिर कि बीता भरके अकिल लेके सारन के समुंदर नापेके हिमाकत अनजाने में कर बइठल बानी। हम भलही दमगर लेखक ना होखीं बाकिर मनगर नेही जरूर हउई। भोजपुरी के सरधा निवेदन करिके कहे के चाह तानी—

"साध इहे बा होय बढ़न्ती, हरदम एह भासा के
अपना माटी से उपजल, पनकल, लहरल आसा के
खाली कहला से ना होखी, मेहनत करीं, निखारीं
जतना होखे पहुँच-समाइत, ओतने गोड़ पसारीं

जय भोजपुरी! जय हिन्दी!

—गुदरी बाजार, छपरा

ओम इन्टरप्राइजेज, छपरा

का ओर से

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के प्रतिनिधि लोगन के हार्दिक स्वागत

वर्ष 1992 निर्माण वर्ष के रूप में मनाने का संकल्प

"श्रेष्ठतर निर्माण के लिए समर्पित"

—: निगम के उद्देश्य :—

- *न्यूनतम व्यय*
- *निश्चित समय पर कार्य सम्पादित*
- *सर्वोच्च गुणवत्ता*
- *श्रेष्ठतर निर्माण*

प्रबन्ध निदेशक
राजा राम राय

अध्यक्ष
शिवाधार पासवान

बिहार स्टेट कन्सट्रक्शन कारपोरेशन लि.
श्रीसीता राम सदन, बोरिंग रोड, पटना - 1

भोजपुरी के उन्नायक, गायक कवि : श्री मोती बी. ए.

• अक्षयवर दीक्षित

श्री मोती बी. ए. के पूरा नाँव मोतीलाल उपाध्याय ह, बाकी ऊ मोती बी. ए. के नाँव से विख्यात बाड़े। इनकर जनम १ अगस्त १९१९ के देवरिया जिला का बरेजा गाँव में, पिता पं. रामकृष्ण उपाध्याय का घरे, माताजी श्रीमती कौशल्या देवी के गर्भ से भइल। उनकर शैक्षिक योग्यता एम. ए., बी. टी., साहित्यरत्न ह बाकी बी. ए. के उपाधि इनके नाँव का साथे विशेष रूप से जुड़ि गइल बा।

इनकरा काव्य में शाश्वत जीवन के प्रति प्रेम आ युग-बोध दूनू प्रगट भइल बा। मोती जी के काव्य-साधना कवनो स्थल पर हलुक या सस्ता नइखे भइल। ऊ निरन्तर दिव्यता आ पवित्रता के दिशा में अग्रसर होत गइल बा।

भाषा पर मोतीजी के पूरा अधिकार बा। गोरखपुर विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के अवकाशप्राप्त विद्वान रीडर डॉ. प्रताप सिंह आ आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी भाषा पर इनके अधिकार के बात मनले बाड़े। भोजपुरी उर्दू, खड़ी बोली हिन्दी आ अंग्रेजी में गद्य-पद्य लिखला के इनका में समान रूप से प्रतिभा बा।

सन् १९३९ से १९४४ ले दैनिक अग्रगामी, दैनिक आर्यावर्त्त, दैनिक संसार के संपादकीय विभाग में मोतीजी सेवारत रह चुकल बानीं। हिन्दी भोजपुरी, उर्दू आ अंग्रेजी में प्रकाशित मौलिक रचना भी बाड़ी स। कुछ रचना के नाँव दिहल जाता—

मृगतृष्णा, कवि और कविता, समिधा, कवि भावना, मानव, अश्वमेघ यज्ञ, आँसू डूबे गीत, बादलिका, पायल छुम-छुम बाजे, हरसिंगार के फूल, प्रतिबिम्बिती, कुछ गीत कुछ कविता, गति के चरण, लाहौर की नहर, तिनका-तिनका शबनम-शबनम, रश्के गुहर, दर्दे गुहर, राशन की दुकान आ इतिहास का दर्द (निबंध संग्रह)।

सेमर के फूल, मोती के मुक्तक, बन-बन बोलेले कोइलिया, भोजपुरी सॉनेट। अनुवाद—जॉन ड्रिंक वाटर रचित नाटक अब्राहम लिंकन आ महाकवि कालिदास रचित मेघदूत के भोजपुरी अनुवाद (छन्द में)

महाकवि शेक्सपीयर के चतुर्दश पदियन (सॉनेट) के पद्यानुवाद, रबीबेन रजरा (राबर्ट ब्राइनंग) के गीतमय रूपान्तर, एस. टी. कालरिज के काव्य 'दी राइम ऑफ दि एन्शेंट मैरिनर' के पद्यानुवाद, डी. डी. राजेटी कृत 'दी ब्लेसेडमोजेल' के अनुवाद पद्य में। सेवा हिन्दी में। भोजपुरी अनुवाद के उल्लेख ऊपर हो चुकल बा। अंग्रेजी के मौलिक रचना 'लव एण्ड ब्यूटी' (काव्य सॉनेट छन्द में) पद्यमय हिन्दी रूपान्तर के साथ।

आत्मकथ्य धारावाहिक देवरिया के साप्ताहिक पत्र 'जनचक्षु' में डेढ़ बरिस से क्रमवार छपि रहल बा। विभिन्न हिन्दी-भोजपुरी पत्र-पत्रिकन में निबन्ध आ कविता छपेली सँ।

मोती बी. ए. के सम्मान जेतना होखे के चाहीं ओतना ना भइल, ई बाति बराबर कहल जाला बाकी मोतीजी ए बात के स्वीकार ना करेलें। ऊ कहेलें कि यश कामना आ यश लोलुपता एके चीज ह। लोलुपता कामना के भ्रष्ट क देले। श्रेष्ठ महापुरुषन के जेकरे में कवनो कमजोरी ना होले, नाम आ यश के प्राप्ति के कामना आखिरी कमजोरी ह। 'मन्दः कवि यशः प्रार्थी'। तवनो पर मोतीजी के सम्मान सभे करेला। कई संस्थन से उनके उपाधि पत्र मिलल बा। उत्तर प्रदेश शासन के साहित्यिक पुरस्कार समिति के ओर से उनके 'समिधा' नामक काव्य पुस्तक १९७३-७४ में पुरस्कृत कइल गइल। आदर्श अध्यापक के रूप में उ. प्र. शासन के शिक्षा विभाग सन् १९७८ में सम्मानित आ पुरस्कृत कइलसि। भोजपुरी के समग्र सेवा करे खातिर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के 'राहुल सांकृत्यायन' नामित पुरस्कार से सन् १९८९ में सम्मानित आ पुरस्कृत कइल गइल। मोतीजी चाहें भा ना चाहें मानें भा ना मानें जेकरा सम्मान करे के बा ऊ उनके सम्मान करबे करी। उनका सम्बन्ध में हरिवंश राय 'बच्चन' के ई कथन सत्य बा कि 'इसने (लेखक ने) और कुछ किया हो या न किया हो आपको सरल बना दिया है, आपको संतुष्ट

होना चाहिए।' एहसे बढ़के सम्मान आउर का हो सकेला।

फिल्म के द्वारा भोजपुरी के प्रचार आ प्रसार सबसे पहिले मोती बी. ए. कइले। फिल्मीस्तान लिमिटेड गोरे गाँव के फिल्म 'नदिया के पार' बनल जवना में नायक रहले दिलीप कुमार, नायिका रहली—कामिनी कौशल, निदेशक रहले सी. रामचन्द्र आ गीतकार रहले मोती बी. ए.। एकर एगो गीत ह—

'कठवा के नइया बनइहे रे मलहवा
नदिया के पार दे उतार।'

फिल्म बहुत लोकप्रिय भइल आ इ गीत भारत तथा भारत के बाहर बिदेसन में गूंजि उठल, व्यापि गइल। भोजपुरी के मिठास पर आ एकरे अभिव्यंजना शक्ति पर जे केहू सुनल लट्टू हो गइल, आ के ना सुनल।

सत्य के स्वरूप कबो, कवनो दसा में मलीन ना होखे पावेला। भोजपुरी के सत्य दुनिया के सामने जब साक्षात उतरि गइल त दुनिया भर के लोग मोहासक्त होके ओके अपनावे के फेर में परि गइल। शाहाबादी के जबरदस्त भूमिका 'कठवा के नइया' आ 'मोरे राजा हो ले चलऽ नदिया के पार' तइयार क देले रहे। भोजपुरी के धूमि मचि गइल। ए क्रान्तिकारी परिवर्त्तन के श्रेय मोती बी. ए. के बा। विभिन्न भाषा-भाषी लोगन के समूह में भोजपुरी के प्रतिष्ठा मोतीए जी का करते भइल।

फिल्म संसार में रहि के मोती बी. ए. पचीसन गो फिल्म में गीत लिखले जइसे कैसे कहूँ, सुभद्रा, भक्त ध्रुव, रामवाण, सुरेखा हरण, इन्द्रासन, काफिला, राम विवाह, किसी की याद, रिमझिम, साजन, सिन्दूर, नदिया के पार, गजब भइले रामा (भोजपुरी), ठकुराईन, (भोजपुरी), चम्पा-चमेली (भोजपुरी)। वृतान्त लमहर बा। मोती बी. ए. के गजल-गीत 'साजन' में हिट भइल। ओकर पहिलकी कड़ी रहे—

'हमको तुम्हारा ही आसरा, तुम हमारे हो न हो।'

सन् १९४८ के इ गीत आजु ले बाजेला। अपने समय के इ गीत सर्वश्रेष्ठ रहे आ दुनिया भर में एकर प्रचार-प्रसार भइल। सी. रामचन्द्र के संगीत आ मु. रफी के स्वर रहे।

मोती बी. ए. अपने किशोरावस्था से देशभक्ति के भावना से भरल रहले। तकली कातल, चरखा चलावल, झण्डा लहरावल आ आजादी के गीत गावल इनकर नियमित कार्यक्रम रहे। एम. ए. पास कइला के बाद बाबू जयप्रकाश नारायण के सर्वोदय आन्दोलन से इ जुड़ गइलें आ डॉक्टर स्वामीनाथ सिंह अउर त्रिलोचन शास्त्री के साथे गिरफ्तार हो गइले भारत रक्षा कानून में। १५ दिन तकले चेतगंज के हवालात में बन्द रहला के बाद वाराणसी सेन्ट्रल जेल में भेज दिहल गइले। कवनो सबूत ना मिलला से एक-डेढ़ महीना बाद मोती जी जेल से रिहा हो गइले।

हिन्दी आ भोजपुरी में राष्ट्रीय चेतना उभारेवाला बहुत गीत आ कविता लिखलें। सिद्धान्तविहीन पार्टी बाजी के खिल्ली उड़ावत मोती जी लिखलें—

'अइसे चलि नाइ, ई त नइए में छेद बा।
पछिम कांग्रेसी जे बा, पुरुब सोशलिस्ट बा।
रहनि जनसंघी बाटे चलन कम्युनिस्ट बा।
लाल बा लंगोटा एकर टोपिए सफेद बा।
कइसे चलि नाइ, इ त नइए में छेद बा।

मोतीजी के विचार राष्ट्रीय धारा के साथ-साथ भारतीयता के रंग में रँगि गइल बाटे। अब कैसे लाचारी, गद्दारी, सवारी, बेकारी, मुर्दाबाद, राशन के दुकान, पन्द्रह अगस्त आ छब्बीस जनवरी वगैरह कवितन से ऊपर जवन बाति कहल गइल बा स्पष्ट हो जात बा।

फिल्म क्षेत्र में मोती बी. ए. भोजपुरी में सफल गीत लिख के भोजपुरी के प्रचार प्रसार जरूर कइलें बाकी सन् १९५३-५४ ले ऊ कवनो साहित्यिक महत्व के रचना भोजपुरी में ना कइले रहलें। 'भोजपुरी' मासिक पत्र के संपादक बाबू रघुवंश नारायण सिंह आ प्रसिद्ध उपन्यासकार जगदीश ओझा 'सुन्दर' के आग्रह से उनके ध्यान एह दिशा में गइल जवना के फलस्वरूप **'महुआबारी'** आ **'तनी अउरी दउर हिरना पा जइब किनारा'** जइसन बेजोड़ साहित्यिक कविता ऊ लिखले भोजपुरी में। एह दूनू कवितन के भोजपुरी संसार दिल खोलि के तारीफ कर दीहल। मोती बी. ए. के उत्साह भोजपुरी में रचना करे खातिर बढ़ि गइल। उहाँ के कविता पुस्तक **'सेमर के फूल'** १९७२ में प्रकाशित भइल जवना के प्रशंसा सर्वत्र भइल। एकरे बाद एक से एक भोजपुरी काव्य जइसे भोजपुरी सॉनेट, तुलसी रसायन, बन-बन बोलेले कोइलिया, भोजपुरी मेघदूत, अब्राहम लिंकन नाटक (अनुवाद) प्रकाशित भइले सँ। भोजपुरी मुक्तक मोतीजी के एतना लोकाप्रिय भइल कि आम आदमी के जबान पर ऊ चढ़ि गइले सँ जइसे—

चाहे रोवऽ भा गावऽ ठठा के हँसऽ
जवन होखे के बा तवन होखबे करी।
जिन्दगी चढ़ि गइल बाटे जब दाँव पर
चाहे इबे करी चाहे जइबे करी॥
जवने खूँटा बछरुआ बन्हा गइल बा
हुमचला से का फरिआए के बा?
तोरि के फेंकि दिहलस त का हो गइल
फेनू एही में ओकरा बन्हाए के बा॥
दाल रोटी आ माठा जो मीलत रही
जब ले गमछा में भूजा आ भेली रही
तेल सरिसो के बुकवा जो लागल करी
अपने किस्मत पर झंखत चमेली रही॥

—भोजपुरी भवन, निराला नगर, सीवान।

शुभ कामनाओं के साथ -

श्री मोती (प्राईवेट) लिमिटेड

वितरक - हीरो होन्डा

सिनेमा रोड, हाजीपुर

शुभ कामनाओं के साथ :-

श्री मोती आयुर्वेद भवन

छपरा

विशिष्ट उत्पादन :-

(1) हेमा कुसुम केश तेल

(2) श्री मोती दंत मंजन (लाल)

लेजर प्रिंटर, नयाटोला, काजीपुर, पटना-4 में मुद्रित